(हिन्दी साप्ताहिक)

गूँज केसरी

RNI N0. - UTTHIN/2023/88849

वर्षः 04 अंकः 32 देहरादून, मंगलवार 24 नवम्बर 2026 मूल्य : 2 रुपये प्रति पृष्ठः 4

मुख्यमंत्री धामी ने श्रीनगर में बैकुंठ चतुर्दशी मेले एवं विकास प्रदर्शनी का किया शुभारंभ

• श्रीनगर में साइंस सिटी विकसित करने तथा पंचप्रयाग और धारी देवी मंदिर के समीप आधुनिक घाटों के निर्माण की घोषणा

• श्रीनगर से देहरादून के लिए जल्द शुरू होगी हेली सेवा, क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं के विस्तार पर विशेष जोर



श्रीनगर गढ़वाल (ब्यूरो)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सोमवार को श्रीनगर में आयोजित बैकुंठ चतुर्दशी मेले एवं विकास प्रदर्शनी का विधिवत शुभारंभ किया। इस अवसर पर स्थानीय लोगों ने पारंपरिक ढोल-दमाऊं, पुष्पवर्षा एवं जयकारों के साथ मुख्यमंत्री का भव्य स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने मेले में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एवं ग्रामोत्थान परियोजना के अंतर्गत लगाए गए विभिन्न स्टॉलों का निरीक्षण कर स्थानीय उत्पादों एवं महिला स्वयं सहायता समूहों की गतिविधियों की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने पारंपरिक सिलबट्टे पर पहाड़ी नमक भी पीसा। मुख्यमंत्री ने कमलेश्वर महादेव मंदिर में पूजा-अर्चना कर प्रदेश की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की।

मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि अलकनंदा नदी के तट पर स्थित श्रीनगर का धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से विशेष महत्व है। कमलेश्वर महादेव मंदिर हमारी समृद्ध धार्मिक आस्था और पौराणिक परंपराओं का महत्वपूर्ण केंद्र है। उन्होंने कहा कि बैकुंठ चतुर्दशी मेला केवल धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि हमारी लोकसंस्कृति, परंपराओं और सामाजिक एकता का प्रतीक भी है। ऐसे आयोजन नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार विकास के साथ सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है। केदारखंड मंदिर माला मिशन, मानसखंड मंदिर माला मिशन तथा अन्य योजनाओं के माध्यम से धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों को विकसित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के साथ महिला स्वयं सहायता समूहों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार मातृशक्ति के कल्याण एवं सशक्तीकरण के लिए निरंतर महत्वपूर्ण निर्णय ले रही है। आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों, सहायिकाओं एवं आशा कार्यकर्ताओं के मानदेय में एक दिसंबर 2026 से वृद्धि करने का निर्णय लिया गया है। राज्य सरकार विकास और विरासत के संकल्प के साथ उत्तराखण्ड को देश के अग्रणी राज्यों में शामिल करने की दिशा में कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रीनगर क्षेत्र में लगभग 200 करोड़ रुपये की सीवर लाइन परियोजना को आगे बढ़ाया जा रहा है। लगभग 650 करोड़ रुपये की लागत से राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) का निर्माण कार्य प्रगति पर है। क्षेत्र में पैरामेडिकल कॉलेज एवं नर्सिंग कॉलेज की स्थापना की दिशा में भी प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मंडी-चौरास-जाखणी पंपिंग पेयजल योजना पर लगभग 37 करोड़ रुपये व्यय किए जा चुके हैं। राजकीय आदर्श इंटर कॉलेज श्रीनगर में आवासीय बालक छात्रावास का निर्माण किया जा रहा है। नगर में आधुनिक बस स्टैंड एवं पार्किंग सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। कोटद्वार-पौड़ी-श्रीनगर सड़क के दो लेन चौड़ीकरण की प्रक्रिया भी आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना का कार्य काफी तेजी से हो रहा है। रेल कनेक्टिविटी के विस्तार से क्षेत्र में आवागमन सुगम होने के साथ पर्यटन एवं स्थानीय आर्थिकी को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि बेस अस्पताल श्रीनगर में लगभग 25 करोड़ रुपये की लागत से क्रिटिकल केयर ब्लॉक का निर्माण किया गया है।

नगर निगम क्षेत्र में लगभग नौ करोड़ रुपये की विकास योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया गया है। इनमें ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, वर्षा जल संचयन, सड़क एवं नाली निर्माण तथा पार्कों के सौंदर्यीकरण से संबंधित कार्य शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रीनगर से देहरादून के लिए जल्द हेलीकॉप्टर सेवा शुरू की जाएगी। इससे स्थानीय लोगों, पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं को आवागमन की बेहतर सुविधा उपलब्ध होगी। मुख्यमंत्री ने श्रीनगर में उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट) के माध्यम से साइंस सिटी विकसित करने की घोषणा की। उन्होंने श्रीनगर नगर निगम के नए कार्यालय भवन के निर्माण को स्वीकृति देने की बात भी कही। इसके साथ ही विष्णुप्रयाग, नंदप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग एवं देवप्रयाग में आधुनिक घाटों के निर्माण एवं सौंदर्यीकरण तथा धारी देवी मंदिर के समीप श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए आधुनिक घाट विकसित करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने बैकुंठ चतुर्दशी मेले के आयोजन के लिए सरकारी सहयोग प्रदान करने की भी घोषणा की। कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में श्रीनगर क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल एवं आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि श्रीनगर में लगभग 70 करोड़ रुपये की लागत से 24 घंटे पेयजल उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कमलेश्वर महादेव से संबंधित विशेष डाक आवरण तथा शाइनी कृष्ण उनियाल की पुस्तक मां राजराजेश्वरी चालीसा का विमोचन भी किया।

पूर्व विधायक गुनसोला ने मसूरी से चुनाव लड़ने की ताल ठोकी

देहरादून (ब्यूरो)। पूर्व विधायक जोत सिंह गुनसोला ने कहा कि मसूरी के समग्र विकास की बात की जानी चाहिए। पर्यटन पर सभी आधारित है, आर्थिकी जुड़ी है, ऐसे में सुविधाओं को बहाल करने व समस्याओं के समाधान का प्रयास किया जाना चाहिए। इस पर गंभीर मंथन करने की जरूरत है।

उन्होंने आगामी विधानसभा में मसूरी से चुनाव लड़ने की भी ताल ठोक दी है और कहा कि अगर जनता ने अवसर दिया तो मसूरी की बेहतरी के लिए कार्य करेंगे।सोमवार को पूर्व विधायक जोत सिंह गुनसोला ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि मसूरी समस्याओं से घिरा है। पर्यटकों व स्थानीय लोगों को हो रही असुविधा पर चिंतन करने की जरूरत है। दिल्ली से ढाई घंटे में पहुंच रहा है, लेकिन मसूरी में चार से पांच घंटे का समय लग रहा है। जाम की स्थिति से निपटने के लिए ठोस प्रयास करने की जरूरत है। वहीं कहा कि अगर जनमानस ने मौका दिया तो इन समस्याओं के समाधान का प्रयास किया जाएगा। कहा कि उन्होंने पार्टी नेतृत्व को अपना आवेदन मसूरी विधानसभा से लड़ने का पत्र सौंपा है। दो बार पार्टी ने पालिकाध्यक्ष बनाया, दो बार विधायक बनाया व अन्य दायित्वों का निर्वहन भी किया।

विधायक रहते अपने कर्म को करने का प्रयास किया, जिस पर विधानसभा ने उन्हें 2010 में सर्वश्रेष्ठ विधायक होने का अवसर दिया। मसूरी की जनता की पहले भी सेवा की व आज भी कर रहे हैं व करने की इच्छा रख रहे हैं। मसूरी विधानसभा की जनता अवसर न देती तो विधायक न होते। राज्य निर्माण में लोगों ने शहादतें दीं व उसके बाद राज्य मिला व विधानसभाएं छोटी हुईं। उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी में मसूरी विधानसभा की दावेदारी की है, वहीं पार्टी जिसे टिकट देगी, उसका समर्थन करेंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा विधायक ने 15 सालों में मसूरी का विकास नहीं किया।

यातायात नियमों के प्रति लोगों को जोड़ने की कवायद, दून पुलिस ने चौराहों पर बांटे पंपलेट

देहरादून (ब्यूरो)। देहरादून पुलिस ने रविवार को शहर के प्रमुख चौराहों पर विशेष यातायात जागरूकता अभियान चलाया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर हुई इस कार्रवाई में पुलिस ने दोपहिया वाहन चालक के साथ पीछे बैठने वाली सवारी को भी अनिवार्य रूप से हेलमेट पहनने की अपील की है।

शहर के व्यस्त इलाकों में लोगों को सड़क सुरक्षा से जोड़ने के लिए पुलिस टीमों ने एग्जीबिशन वैन और पंपलेट का सहारा लिया। घंटाघर, दिलाराम चौक, सर्वे चौक, लैंसडाउन चौक, रिस्पना, आईएसबीटी, बल्लूपुर और प्रेमनगर जैसे स्थानों पर लोगों को रुकवाकर यातायात नियमों की अहमियत समझाई गई।

अभियान के दौरान पुलिसकर्मियों ने एग्जीबिशन वैन पर प्रदर्शित वीडियो के माध्यम से सड़क दुर्घटनाओं से बचाव के तरीके दिखाए। दरअसल, कई वाहन चालक खुद हेलमेट पहन लेते हैं, लेकिन पीछे बैठने वाले व्यक्ति के लिए इसे नजरअंदाज कर देते हैं। पुलिस ने इस लापरवाही पर ध्यान खींचते हुए दोपहिया चालकों और पीछे बैठने वाली सवारी दोनों को हेलमेट लगाने की जरूरत बताई। इसके साथ ही मौके पर तैनात पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों ने राहगीरों तथा वाहन चालकों को यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा से जुड़े पंपलेट वितरित किए। असली चुनौती यह है कि सड़क हादसों में सिर पर चोट लगने से जान जाने का जोखिम काफी बढ़ जाता है। उत्तराखंड में मोटर वाहन नियमों के तहत बिना हेलमेट वाहन चलाने और पिलियन राइडर के हेलमेट न पहनने पर जुर्माने का प्रावधान लागू है। स्थानीय स्तर पर यातायात नियमों के उल्लंघन को लेकर पुलिस और परिवहन विभाग समय-समय पर सख्ती व जागरूकता दोनों स्तरों पर काम करते हैं।



देहरादून जैसे बढ़ते ट्रैफिक वाले शहर में चौराहों पर सीधे संवाद के जरिए नियमों की जानकारी देने को इसी प्रयास का हिस्सा माना जा रहा है। जनपद के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में भी पुलिस टीमों ने अपने-अपने इलाकों में लोगों को नियमों के प्रति सचेत करने का क्रम जारी रखा। अभियान के दौरान इस बात पर बल दिया गया कि नियमों का पालन केवल चालान से बचने के लिए नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा के लिए जरूरी है। दून पुलिस ने अपील की है कि 'दोपहिया वाहन पर चालक एवं पीछे बैठी सवारी दोनों अनिवार्य रूप से हेलमेट धारण करें, यातायात नियमों का पालन करें तथा स्वयं एवं दूसरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में सहयोग प्रदान करें।'

सम्पादकीय..



वोट के लिए खजाने पर बोझ

राजकोष गहरे दबाव में है। लेकिन सियासी पार्टियों के लिए चुनावी राजनीति के नए उभरते तकाजे कहीं ज्यादा अहम हैं। इसलिए वे अपने वर्तमान को सुरक्षित रखने के लिए देश के भविष्य को नजरअंदाज कर रहे हैं। यह ऐसी चेतावनी है, जिन पर ना सिर्फ ध्यान दिया जाना चाहिए, बल्कि जिस पर अब गंभीर राष्ट्रीय बहस की जरूरत है। चेतावनी इस हकीकत पर आधारित है कि राज्य सरकारों के पास सड़क, स्कूल, अस्पताल और बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए अपेक्षाकृत कम बच रहा है। इसलिए कि सरकारी खजाने का ज्यादातर पैसा रोजमर्रा के खर्च, वेतन, पेंशन, और सब्सिडी में चला जाता है। अब ऊपर से वोट खरीदने का बढ़ा चलन है। पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च ने अपनी ताजा स्टेट ऑफ स्टेट फाइनेंसेज रिपोर्ट में इस पर जोर देना जरूरी समझा है कि 2027 में जिन सात राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं, वहां बिना शर्त नकद हस्तांतरण योजनाएं फिर चुनावी राजनीति का सबसे बड़ा हथियार बनती दिख रही हैं। रिपोर्ट में ध्यान दिलाया गया है कि इन सात राज्यों ने 2026-27 के लिए कुल मिलाकर 35,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि ऐसी योजनाओं के लिए बजट में रखी है। वैसे देश के सभी राज्यों को मिला लिया जाए, तो यह आंकड़ा करीब चार लाख करोड़ रुपये तक पहुंच जाता है। गौर कीजिए-2022-23 में यह राशि करीब डेढ़ लाख करोड़ रुपये थी यानी सकल घरेलू उत्पाद के 0.6 प्रतिशत के करीब। 2026-27 में इसके बढ़कर जीडीपी के करीब एक प्रतिशत तक पहुंचने का अनुमान है। इसके ऊपर सब्सिडी पर होने वाला खर्च है। पीआरएस के मुताबिक 2024-25 में 29 राज्यों ने सब्सिडी पर 4.4 लाख करोड़ रुपये खर्च किए, जो उनकी कुल राजस्व प्राप्तियों का 11 प्रतिशत था। जाहिर है, राज्यों का बजट गहरे दबाव में है। लेकिन सत्ताधारी दलों और नेताओं के लिए चुनावी राजनीति के नए उभरते तकाजे कहीं ज्यादा अहम हैं। इसलिए वे अपने वर्तमान को सुरक्षित रखने के लिए देश के भविष्य को नजरअंदाज कर रहे हैं। दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस रुझान पर सर्वदलीय सहमति है। पीआरएस ने उचित ही ध्यान दिलाया है कि जिन राज्यों में अगले साल चुनाव होने हैं, उनमें पांच में भाजपा की सरकार है। एक में कांग्रेस और एक में आम आदमी पार्टी की सरकार है। और वे सभी वोट खरीद योजना में समान रूप से तल्लीन हैं।

अंधेरों में उजाले की दस्तक देते नानक

डॉ. घनश्याम बादल

जब दुनिया धर्म, जाति, भाषा और संप्रदाय की दीवारों में बंटकर एक-दूसरे को पहचानने से इंकार करने लगे, धर्म के नाम पर श्रेष्ठता का अहंकार और आस्था के नाम पर वैमनस्य फैलने लगे, तब पांच सौ से अधिक वर्ष पहले एक ऐसी आवाज़ उठी थी जिसने इंसान को उसकी असली पहचान याद दिलाई थी। यह आवाज़ थी गुरु नानक देव जी की।



'एक ओंकार' का ध्येय वाक्य देने वाले नानक ने कहा था कि ईश्वर एक है, उसकी बनाई दुनिया एक है और मनुष्य की सबसे बड़ी पहचान उसका इंसान होना है। आज गुरु नानक देव जी का प्रकाश पर्व मनाते हुए उनके इसी संदेश को समझने और जीवन में उतारने की जरूरत है।

1469 में कार्तिक पूर्णिमा के दिन तलवंडी (वर्तमान ननकाना साहिब, पाकिस्तान) में पिता मेहता कालू और माता तृप्ता देवी था के घर नानक देव जी का जन्म हुआ, उनकी बड़ी बहन बीबी नानकी ने बचपन से ही उनकी असाधारण प्रतिभा और आध्यात्मिक चेतना को पहचान लिया था। बाल्यकाल उनका मन कर्मकांडों से अधिक जीवन के सत्य, प्रकृति और मनुष्य के दुख-दर्द को समझने में लगता था।

किशोरावस्था में जब उन्हें जनेऊ धारण कराने की रस्म की जा रही थी तो उन्होंने ऐसा धागा पहनने से इनकार कर दिया जो शरीर पर तो दिखाई दे, लेकिन मनुष्य के आचरण में पवित्रता न ला सके। उन्होंने ऐसे जनेऊ की कल्पना की जो दया की कपास, संतोष के सूत, संयम की गांठ और सत्य की ऐंठन से बना हो। यह प्रसंग बताता है कि गुरु नानक बाहरी प्रतीकों से अधिक आंतरिक शुचिता को महत्व देते थे।

एक अन्य चर्चित प्रसंग सुल्तानपुर लोधी का है। वहां वे नवाब दौलत खां की सेवा में अनाज के भंडार का काम देखते थे। कहा जाता है कि एक दिन अनाज तौलते हुए वे तेरह की गिनती पर पहुंचे तो तेरा-तेरा कहते हुए आध्यात्मिक भाव में डूब गए। तेरा का अर्थ केवल संख्या नहीं, बल्कि सब कुछ परमात्मा का है—यह भाव उनके जीवन दर्शन का आधार बन गया। उन्होंने अपनी संपत्ति, अहंकार और स्वार्थ को मनुष्य की सबसे बड़ी बाधाओं में माना।

उन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा तिब्बत, अरब और मध्य एशिया तक की 'उदासियां' यात्राएं कीं। इन यात्राओं का उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य से जोड़ना और समाज में व्याप्त रूढ़ियों, पाखंडों तथा भेदभाव को चुनौती देना था। उनके साथी भाई मरदाना रबाब बजाते और गुरु नानक अपनी वाणी के माध्यम से लोगों तक जीवन का संदेश पहुंचाते।

गुरु नानक से जुड़ा भाई लालो और मलिक भागो का प्रसंग उनकी सामाजिक दृष्टि को समझने के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। एक ओर गरीब बढ़ई भाई लालो था, जो मेहनत और ईमानदारी से कमाकर भोजन करता था, दूसरी ओर धनी मलिक भागो था, जिसके यहां वैभवशाली भोज का आयोजन था। गुरु नानक ने लालो के घर भोजन करना पसंद किया। लोकप्रचलित प्रसंग के अनुसार उन्होंने लालो की सूखी रोटी में मेहनत की कमाई का अमृत और मलिक भागो के पकवानों में शोषण की कमाई का प्रतीक देखा। उनका संदेश साफ था—ईमानदारी की सूखी रोटी बेईमानी के छप्पन भोग से कहीं श्रेष्ठ है।

गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का सार तीन सूत्रों में समाहित है—नाम जपो, किरत करो और वंड छको। अर्थात ईश्वर का स्मरण करो, ईमानदारी से मेहनत करके आजीविका कमाओ और अपनी कमाई तथा संसाधनों को दूसरों के साथ बांटो।

उन्होंने एक ओंकार के माध्यम से एक परम सत्ता का संदेश दिया। उनके लिए ईश्वर किसी एक धर्म, जाति या स्थान तक सीमित नहीं था। उनकी दृष्टि में न कोई हिंदू था, न मुसलमान के रूप में कोई पराया; सब उसी परमात्मा की संतान थे। उन्होंने स्त्री और पुरुष की समानता पर भी जोर दिया। उस समय जब समाज में महिलाओं को दोयम दर्जे पर रखा जाता था, उन्होंने सवाल उठाया कि जिस स्त्री से राजा-महाराजा और सामान्य मनुष्य जन्म लेते हैं, उसे छोटा कैसे माना जा सकता है? जातिगत ऊंच-नीच, छुआछूत और धार्मिक आडंबरों का विरोध उनकी वाणी और व्यवहार दोनों में दिखाई देता है।

गुरु नानक ने करतारपुर में 1539 में अंगद देव जी को अपना उत्तराधिकारी बनाकर संसार से विदा ली। गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित उनकी वाणी आज भी करोड़ों लोगों के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन का स्रोत है। प्रकाश पर्व गुरु नानक के जन्मोत्सव से कहीं बढ़कर उनके विचारों के प्रकाश को जीवित रखने का अवसर है। गुरुद्वारों में अखंड पाठ, कीर्तन, प्रभात फेरियां, नगर कीर्तन और लंगर के आयोजन इसी भावना को अभिव्यक्त करते हैं। लंगर की परंपरा विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहां अमीर-गरीब, ऊंच-नीच और जाति-धर्म का भेद भुलाकर सभी एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। यह केवल भोजन कराने की व्यवस्था नहीं, बल्कि समानता का जीवंत पाठ है।

आज के दौर में गुरु नानक की शिक्षाओं की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। आज आर्थिक भ्रष्टाचार और बेईमानी सामान्य व्यवहार का हिस्सा बनते जा रहे हैं, धार्मिक पहचान के आधार पर अविश्वास बढ़ रहा है और नफ़रत का कारोबार फल-फूल रहा है। ऐसे समय में किरत करो हमें ईमानदार श्रम का महत्व बताता है, वंड छको हमें संसाधनों पर केवल अपना अधिकार समझने की प्रवृत्ति से बाहर निकालता है और नाम जपो हमें अपने भीतर झांकने तथा अहंकार से मुक्त होने की प्रेरणा देता है।

गुरु नानक का जीवन याद दिलाता है कि पूजा-पाठ का महत्व तभी है जब हमारे व्यवहार में दया, करुणा और सत्य दिखाई दें। भूखे को भोजन, जरूरतमंद को सहारा, कमजोर को सम्मान और असहमत व्यक्ति को भी सुनने का धैर्य देना ही सच्ची धार्मिकता है। उनकी शिक्षाओं को अपनाने का अर्थ है बेहतर मनुष्य बनना। यदि राजनीति में ईमानदारी, कारोबार में नैतिकता, समाज में समानता, परिवार में परस्पर सम्मान और सार्वजनिक जीवन में सेवा का भाव आ जाए तो अनेक समस्याएं अपने आप कम हो सकती हैं। प्रकाश पर्व का बड़ा संदेश है कि अंधेरा केवल दीप जलाने से नहीं, विचार बदलने से दूर होता है। उनके जन्मदिन पर गुरुद्वारों में रोशनी करना और लंगर में सेवा करना अच्छी परंपरा है, लेकिन उससे भी बड़ी बात है अपने मन से भेदभाव, लालच, अहंकार और नफरत का अंधकार मिटाना।

बदरीनाथ धाम पहुंचे 23.49 लाख श्रद्धालु: निकला 485 टन कचरा, बिक्री से नगर पंचायत ने कमाए 9 लाख

चमोली (नि०स०)। चारधाम यात्रा के दौरान बदरीनाथ धाम में बड़ी मात्रा में कचरा एकत्रित हुआ। इस वर्ष यात्रा सीजन में बदरीनाथ नगर पंचायत ने 485.9 टन कचरा एकत्रित कर उसका प्रसंस्करण किया और बिक्री से नौ लाख रुपये की आय अर्जित की। चमोली जिले में स्थित बदरीनाथ धाम के कपाट इस वर्ष 23 अप्रैल को श्रद्धालुओं के लिए खोले गए थे। 16 नवंबर को कपाट बंद होने तक साढ़े छह माह की यात्रा अवधि में 23.49 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने भगवान बदरीविशाल के दर्शन किए।

चमोली के जिलाधिकारी गौरव कुमार ने बताया कि चारधाम यात्रा के दौरान स्वच्छता बनाए रखने के लिए जिले के नगर निकायों में विशेष स्वच्छता अभियान संचालित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में बदरीनाथ नगर पंचायत ने स्वच्छता के साथ कचरा प्रबंधन को आय का माध्यम बनाया है। नगर पंचायत ने इस वर्ष यात्रा काल में 485.9 टन कचरा एकत्रित एवं प्रसंस्कृत कर उसकी बिक्री से नौ लाख रुपये की आय अर्जित की है।



जिलाधिकारी के अनुसार, बदरीनाथ नगर क्षेत्र में सफाई व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिए सुबह और शाम दो पालियों में सफाई कराई गई। इसके साथ ही घर-घर कूड़ा संग्रहण अभियान के माध्यम से घरों से निकलने वाले कचरे को भी एकत्रित किया गया।उन्होंने कहा कि स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और कचरे के पुनर्चक्रण की यह पहल चारधाम यात्रा मार्गों को स्वच्छ बनाए रखने में मददगार साबित हो रही है। साथ ही इससे स्थानीय निकायों के लिए आर्थिक संसाधन जुटाने का भी माध्यम तैयार हो रहा है।

जिलाधिकारी गौरव कुमार ने बताया कि बदरीनाथ धाम की यात्रा समाप्त होने के बाद भी नगर पंचायत की ओर से क्षेत्र में गहन सफाई अभियान चलाया जा रहा है। नगर पंचायत की ओर से यात्रा सीजन के दौरान शुरू की गई कचरा संग्रहण और प्रसंस्करण की व्यवस्था के तहत स्वच्छता अभियान को लगातार आगे बढ़ाया जा रहा है।



प्यादे के टीज़र में जिमी शेरगिल और अध्ययन सुमन की तीखी पूछताछ ने बढ़ाया सस्पेंस, हर सवाल के पीछे छिपा है एक नया राज़!

मुंबई जिमी शेरगिल, अध्ययन सुमन और प्रणूतन बहल अभिनीत यह सस्पेंस थ्रिलर सत्ता, साज़िश, रहस्यों और चालबाज़ियों का ऐसा खेल लेकर आ रही है, जहां हर किरदार की अपनी चाल है। फिल्म 11 दिसंबर 2026 को सिनेमाघरों में होगी रिलीज़। खेल अब और भी दिलचस्प हो गया है! शाइनिंग मून पिक्चर्स ने अपनी आगामी रहस्य और रोमांच से भरपूर फिल्म प्यादे' का पहला आधिकारिक टीज़र जारी कर दिया है। जिमी शेरगिल, अध्ययन सुमन और प्रणूतन बहल अभिनीत इस फिल्म में हर मोड़ पर एक नया ट्विस्ट और हर चेहरे के पीछे छिपा एक अलग राज़ देखने को मिलेगा।



शेखर एस. झा के लेखन और निर्देशन में बनी यह फिल्म दर्शकों को एक ऐसे रोमांचक सफर पर ले जाने का वादा करती है, जहां हर किरदार का अपना मकसद है, हर चाल के अपने नतीजे हैं और जो दिखता है, ज़रूरी नहीं कि हकीकत भी वही हो! टीज़र की शुरुआत होती है एक बेहद दिलचस्प पूछताछ के दृश्य से, जहां आमने-सामने हैं जिमी शेरगिल और अध्ययन सुमन।

जिमी पूछताछ करने वाले अधिकारी के किरदार में हैं, तो वहीं अध्ययन सवालों के घेरे में एक संदिग्ध के रूप में नज़र आते हैं। लेकिन यह कोई आम सवाल-जवाब का सिलसिला नहीं है। यहां हर जवाब के साथ एक नया सवाल खड़ा होता है। माहौल में तनाव है, बातचीत में तल्खी है और सबसे बड़ा सवाल यही कि आखिर पर्दे के पीछे चल क्या रहा है? यानी कहानी की असली बाज़ी अभी खुलनी बाकी है! फिल्म के बारे में बात करते हुए लेखक-निर्देशक शेखर एस. झा कहते हैं, प्यादे के ज़रिए मैं इंसानी व्यवहार के उस अनिश्चित पहलू को सामने लाना चाहता था, जहां हर इंसान के पीछे कोई न कोई मकसद होता है और हर कदम का अपना अंजाम। पूछताछ का यह सिलसिला तो बस एक बड़े खेल की शुरुआत है। जो कहानी ऊपर से सीधी-सादी नज़र आती है, उसकी परतों में कई राज़ छिपे हैं। मैं दर्शकों को इस कहानी के हर पहलू से रूबरू कराने के लिए बेहद उत्साहित हूं। शाइनिंग मून पिक्चर्स के बैनर तले रिंकू सिंह द्वारा निर्मित प्यादे' उनके फिल्मी सफर की एक और अहम पेशकश है। इससे पहले वह नाना पाटेकर और माही गिल अभिनीत एक फिल्म में व्यवसाय प्रमुख की जिम्मेदारी संभाल चुकी हैं। इसके अलावा उन्होंने साल 2019 में रिलीज़ हुई प्रियंशु चटर्जी अभिनीत फिल्म लिटिल बेबी' का निर्माण भी किया था।

दिलचस्प कहानी, दमदार अदाकारी और रहस्यों व चालबाज़ियों के अप्रत्याशित खेल के साथ प्यादे' बड़े पर्दे पर रोमांच और रहस्य का एक अलग ही रंग जमाने के लिए तैयार है। फिल्म 11 दिसंबर 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। शाइनिंग मून पिक्चर्स के बैनर तले रिंकू सिंह द्वारा निर्मित प्यादे' का लेखन और निर्देशन शेखर एस. झा ने किया है। फिल्म में जिमी शेरगिल, अध्ययन सुमन और प्रणूतन बहल अहम भूमिकाओं में नज़र आएंगे। यह रहस्य और रोमांच से भरपूर फिल्म 11 दिसंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी।

मुंबईकरों की फैन हुईं माधुरी दीक्षित, बोलीं- यहां के लोग मदद के लिए तुरंत आते हैं आगे

अभिनेत्री माधुरी दीक्षित के मराठी क्विज शो कौन होणार करोड़पति में अभिनेता और सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर भुवन बाम गेस्ट के तौर पर शिरकत हुए थे। इस दौरान अभिनेत्री ने मुंबई शहर के प्रति अपने लगाव पर बात की। अभिनेत्री और भुवन बाम ने मुंबई के लिए अपने प्यार पर बात की, इस दौरान माधुरी दीक्षित ने मुंबई की खूबी पर प्रकाश डाला, जो उनकी नजर में मुंबईकरों को सबसे अलग बनाती है। अभिनेत्री ने बताया कि मुंबई के लोग दिल के बहुत अच्छे होते हैं और हमेशा अपने आसपास के लोगों की मदद के लिए तैयार रहते हैं। शो के दौरान माधुरी दीक्षित अभिनेता भुवन बाम से पूछती हैं, आपको मुंबई में क्या पसंद हैं? , भुवन बाम कहते हैं, यहां के लोग। माधुरी दीक्षित भुवन बाम की बात से सहमती जताते हुए कहती हैं, यहां के लोग मदद के लिए तुरंत आगे आते हैं और यहां बहुत अपनापन है। भुवन तुरंत उनकी बात से सहमत हो गए और बोले, सौ प्रतिशत। इसके बाद माधुरी ने सीटी बजाई और मुंबईकरों को सलाम करते हुए अपना हाथ उठाया। बता दें कि माधुरी दीक्षित का पालन-पोषण मुंबई में ही हुआ है और उनका बचपन शहर के अंधेरी इलाके में बीता है। बाद में उन्होंने विले पार्ले में कॉलेज की पढ़ाई की और फिर बॉलीवुड में अपना करियर बनाया। शादी के बाद माधुरी अमेरिका चली गईं और अपने बच्चों की परवरिश के दौरान कई साल तक मुंबई से दूर रहीं। बाद में वह वापस शहर लौट आईं और भारतीय मनोरंजन जगत में अपने पेशेवर सफर को फिर से शुरू किया। मराठी सिनेमा के साथ माधुरी दीक्षित के जुड़ाव की बात करें तो उन्होंने बकेट लिस्ट से मराठी फिल्मों में डेब्यू किया था और तब से मराठी सिनेमा के साथ उनका जुड़ाव और मजबूत होता गया है। उन्होंने अपने पति डॉ. श्रीराम नेने के साथ प्रोड्यूसर के तौर पर भी काम किया और 15 अगस्त और पंचक जैसे प्रोजेक्ट्स को बैक किया। वह एक्ट्रेस और प्रोड्यूसर के तौर पर हिंदी और मराठी सिनेमा में लगातार सक्रिय हैं।

आईएफएफआई फिल्म फेस्टिवल में धुरंधर क्यों बनी ओपनिंग फिल्म? मधुर भंडारकर ने बताई वजह



फिल्म निर्देशक मधुर भंडारकर 57वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में इंडियन पैनोरमा जूरी के अध्यक्ष के रूप में भाग लेने के लिए गोवा गए हैं। आईएफएफआई कार्यक्रम में मीडिया के साथ बातचीत में उन्होंने बताया कि ओपनिंग के तौर जूरी ने फिल्म धुरंधर को चुना है। मधुर भंडारकर ने फिल्म धुरंधर की प्रशंसा करते हुए कहा, फिल्म धुरंधर 1 को आज हम आईएफएफआई फिल्म फेस्टिवल में इसलिए दिखा रहे हैं, क्योंकि जिस तरह से इसे शूट किया गया है, बड़े पैमाने पर बनाया गया है और यह एक बहुत ही कमर्शियल ब्लॉकबास्टर फिल्म है। लोगों ने न सिर्फ फिल्म को पसंद किया है, बल्कि इसके गाने भी उतने पसंद किए हैं। परफॉर्मेंस के हिसाब से भी रणवीर और सभी कलाकारों ने शानदार काम किया है। उन्होंने आगे कहा, मुझे लगता है कि यह वो फिल्म थी, जिसे हम सबने मिलकर चुना है, ऐसा नहीं है कि चेयरमैन होने के नाते मैंने अकेले फैसला लिया है। इसे बाकी जूरी मेंबर्स के साथ मिलकर तय किया गया है और हमने सोचा कि यही ओपनिंग फिल्म होनी चाहिए। इस फिल्म को सभी ने पसंद किया है। मुझे पता है कि लोगों ने इसे 2-3 बार देखा है, इसलिए मुझे लगा कि यही सही फिल्म है। इसी वजह से धुरंधर ओपनिंग फिल्म है। मधुर भंडारकर ने फिल्मों को जज करने के क्राइटेरिया पर भी बात की।

अंकिता को लेकर मां के रिएक्शन पर बोले विक्की जैन, कहा- लोगों ने उन्हें विलेन बना दिया था

अभिनेत्री अंकिता लोखंड हाल ही में पति विक्की जैन के साथ नेहा धूपिया और अंगद बेदी के शो डबल डेट पर गए थे। इस दौरान विक्की ने बिग बॉस -17 की उस घटना पर खुलकर बात की, जब उनकी मां ने पत्नी- अभिनेत्री अंकिता लोखंडे के प्रति कड़ा रुख अपनाया था। विक्की जैन ने बताया कि उनकी मां का अंकिता के लिए यह व्यवहार एक मां की भावना से निकलकर बाहर आया था, जब उन्होंने अपने बेटे रियलिटी शो में रोते हुए देखा था। विक्की का कहना है उनकी मां के लिए उन्हें बिग बॉस में संघर्ष करते देखना मुश्किल था। उन्होंने आगे यह भी कहा कि शो के अंदर उन्हें कई अन्य कंटेस्टेंट्स के साथ एक चुनौतीपूर्ण माहौल में रहना पड़ा, जबकि उनका परिवार बाहर से केवल देख सकता था और उस समय उनकी वास्तविक स्थिति से जुड़ नहीं पा रहा था। विक्की जैन कहते हैं, जो लोग ऐसा सोचते हैं कि यह एक बहू की कहानी है, तो उस समय तो मेरी मां के लिए उनके बेटे विक्की की बात थी। बिग बॉस के घर में बहुत मुश्किल माहौल में रहना पड़ता है, जहां आपको 17 लोगों के साथ बैठकर खाना पड़ता है, लगभग अपने हिस्से के खाने के लिए लड़ना पड़ता है, जबकि आपका परिवार दूर से बस देख सकता है। वे यह नहीं समझ पाते कि आप किस दौर से गुजर रहे हैं और वे आपके लिए बेहद चिंतित होते हैं। उन्होंने आगे कहा, यह पहली बार था जब उन्होंने मुझे रोते हुए देखा, जो पहले कभी नहीं हुआ था। मेरी मां ने सोचा, मेरा बेटा, जो कभी नहीं रोया, आज रो रहा है और जब अंकिता ने उनसे एक लाइन कही, चिंता मत कीजिए, मॉम। मैं हूं उनके लिए और मेरी मां ने कहा, तुम हो, लेकिन वह अभी भी रो रहा है। क्या फायदा? जिस पल उन्होंने टीवी पर ऐसा कहा, वह ऐसा हो गया जैसे, यह सास थी जो अपनी बहू के साथ गलत व्यवहार कर रही थी और उन्हें बुरा दिखाया गया। अंकिता और मैं दोनों बॉम्बे में अकेले रहते हैं और हमारा रिश्ता बहुत मजबूत है, लेकिन वहां कुछ भी दिखाई नहीं दिया।



उन्होंने अपनी मां की भावनाओं को समझाते हुए कहा, क्योंकि आखिरकार, एक मां की भावना पूरी स्थिति के बारे में नहीं होती, बल्कि वह उसके बच्चों के बारे में होती है। जब दो बच्चे खेल रहे होते हैं और लड़ाई होती है, तो पिता आगे आकर पता लगाते हैं कि किसकी गलती थी। वह सोचते हैं, क्या यह मेरे बेटे की गलती थी? अगर थी, तो मैं उसे समझाऊंगा। पिता ऐसे ही सोचते हैं। लेकिन एक मां की पहली प्रतिक्रिया होती है, एक सेकंड रुको। पहले मुझे बताओ, मेरे बेटे को किसने छुआ, उसे किसने रुलाया?

मुख्यमंत्री धामी ने अमरापुर घाट पर किया 10 हजार मत्स्य बीजों का संचयन

- मां गंगा की प्राकृतिक मत्स्य संपदा एवं जलीय जैव विविधता के संरक्षण पर दिया जोर
- मुख्यमंत्री ने गंगा की स्वच्छता एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में जनसहभागिता बढ़ाने की अपील की

देहरादून (ब्यूरो)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को विश्व मात्स्यिकी दिवस के उपलक्ष्य में हरिद्वार के अमरापुर घाट पर मत्स्य विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए गंगा नदी में 10 हजार मत्स्य बीजों का संचयन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य गंगा की प्राकृतिक मत्स्य संपदा का संरक्षण एवं संवर्धन, जलीय जैव विविधता को बढ़ावा देना तथा नदी के पारिस्थितिकीय संतुलन के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना रहा।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि मां गंगा हमारी आस्था, संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक होने के साथ ही समृद्ध जैव विविधता एवं प्राकृतिक संसाधनों का महत्वपूर्ण आधार भी हैं। गंगा की निर्मलता, अविरलता और प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि नदियों में पाए जाने वाले जलीय जीवों एवं प्राकृतिक मत्स्य संपदा का संरक्षण पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं पर्यावरण संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत है। नदियों में उपयुक्त प्रजातियों के मत्स्य बीजों का संचयन प्राकृतिक मत्स्य संपदा के संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। ऐसे प्रयासों से जलीय पारिस्थितिकी के संरक्षण के साथ ही मत्स्य संसाधनों के सतत विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि इसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने आमजन से मां गंगा सहित प्रदेश की सभी नदियों की स्वच्छता बनाए रखने, जल प्रदूषण रोकने तथा जलीय जीवों के प्राकृतिक आवासों के संरक्षण में सहयोग करने की अपील की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी नदियां और प्राकृतिक संसाधन आने वाली पीढ़ियों की अमूल्य धरोहर हैं। इनका संरक्षण करते हुए विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जनसहभागिता और सामूहिक प्रयासों से ही स्वच्छ, समृद्ध एवं



पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित भविष्य का निर्माण किया जा सकता है। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष आशुतोष शर्मा, जिलाधिकारी मयूर दीक्षित, मुख्य विकास अधिकारी डॉ. ललित नारायण मिश्र, उप जिलाधिकारी हरिद्वार योगेश मेहरा, सहायक निदेशक मत्स्य गरिमा मिश्रा, पुलिस क्षेत्राधिकारी नगर शिशुपाल सिंह नेगी सहित मत्स्य विभाग के अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

उत्तराखंड में खाद की नई ई-टोकन व्यवस्था रद्द, किसानों को अब पूर्व की भांति मिलेगी खाद:गणेश जोशी

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि मंत्री गणेश जोशी के आग्रह को स्वीकारा, जल्द जारी होगा भारत सरकार का पत्र

देहरादून(नि०स०)। प्रदेश में खाद बिक्री की नई ई-टोकन व्यवस्था से किसानों को हो रही परेशानियों को देखते हुए कृषि मंत्री गणेश जोशी के प्रयास रंग लाया है। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उत्तराखंड में नई ई-टोकन व्यवस्था को रद्द करने के आग्रह को स्वीकार कर लिया है। अब प्रदेश के किसान पुरानी व्यवस्था के तहत पूर्व की भांति उर्वरक प्राप्त कर सकेंगे। इस संबंध में भारत सरकार द्वारा शीघ्र ही आधिकारिक पत्र भी जारी किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि नई ई-टोकन व्यवस्था लागू होने के बाद प्रदेश के किसानों को खाद प्राप्त करने में आ रही दिक्कतों का कृषि मंत्री जोशी ने तत्काल संज्ञान लिया था। रबी फसलों की बुवाई के महत्वपूर्ण समय को देखते हुए उन्होंने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से दूरभाष पर वार्ता करने के साथ ही पत्र भेजकर उत्तराखंड में नई ई-टोकन व्यवस्था में शिथिलता प्रदान करने तथा किसानों को पूर्व की भांति पुरानी व्यवस्था के तहत उर्वरक उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा उनके आग्रह को स्वीकार किए जाने पर कृषि मंत्री गणेश जोशी ने उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों के हितों के प्रति प्रतिबद्ध है। किसानों को खेती-किसानी के कार्यों में किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए सरकार निरंतर प्रयासरत है।

गौरतलब है कि कुछ दिन पहले विधायक कालाढूंगी बंशीधर भगत और पंतनगर में किसान संगठनों के पदाधिकारियों के साथ कृषि मंत्री गणेश जोशी से मुलाकात कर नई ई-टोकन व्यवस्था के कारण किसानों को हो रही समस्याओं से अवगत कराया था और इस प्रकरण में आवश्यक कार्रवाई का आग्रह किया था। कृषि मंत्री गणेश जोशी ने किसानों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए केंद्र सरकार के समक्ष प्रभावी ढंग से विषय उठाया, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

देहरादून में हरीश रावत का आत्मीय भोज, प्रबुद्धजनों को भेंट की सोनिया गांधी की नई किताब

देहरादून में कांग्रेस नेताओं और प्रबुद्धजनों की जुटान, हरीश रावत ने भेंट की सोनिया गांधी की आत्मकथा

देहरादून(नि०स०)। उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ कांग्रेस नेता हरीश रावत ने आज राजधानी देहरादून में समाज के विभिन्न वर्गों से जुड़े प्रबुद्ध एवं गणमान्य नागरिकों के सम्मान में एक आत्मीय दोपहर भोज का आयोजन किया। इस खास अवसर पर उन्होंने कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा लिखित बहुचर्चित आत्मकथा 'Belonging: A Journey of Love' की प्रतियां सभी आमंत्रित अतिथियों को सप्रेम भेंट कीं। दरअसल, यह आयोजन केवल एक औपचारिक भोज तक सीमित नहीं रहा, बल्कि विभिन्न विचारधाराओं और कार्यक्षेत्रों से जुड़े लोगों के बीच संवाद का एक बड़ा मंच बन गया। कार्यक्रम में करीब 60 से 70 प्रतिष्ठित लोगों ने शिरकत की। इनमें कांग्रेस के दिग्गज नेताओं और पदाधिकारियों के अलावा राज्य के नामी चिकित्सक, सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी, वरिष्ठ पत्रकार, साहित्य व संस्कृत जगत के विद्वान और जनसरोकारों से जुड़े चिंतक शामिल रहे।



खास बात यह रही कि इस आत्मीय मिलन में वामपंथी दलों के प्रतिनिधियों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। भोज शुरू होने से पहले हरीश रावत ने स्वयं प्रत्येक अतिथि के पास जाकर उन्हें यह पुस्तक भेंट की। वहीं, उत्तराखंड कांग्रेस की प्रभारी एवं राष्ट्रीय महासचिव कुमारी शैलजा ने भी पद्मश्री बसंती बिष्ट और पूर्व मुख्य सचिव सहित अन्य गणमान्य लोगों को अपने हाथों से पुस्तक प्रदान की। इस दौरान कुमारी शैलजा ने सोनिया गांधी के साथ बिताए अपने पुराने संस्मरणों को भी याद किया। कुमारी शैलजा ने कहा, 'सोनिया जी में बेहद आत्मीयता और ममत्व का भाव है, और उनके साथ बिताए गए वे पल मेरे लिए हमेशा अविस्मरणीय रहेंगे।' असल में, सोनिया गांधी की यह पुस्तक हाल ही में 10 नवंबर को प्रकाशित हुई है, जिसमें उन्होंने इटली से भारत आने, राजीव गांधी के साथ अपने जीवन और भारतीय राजनीति के उतार-चढ़ावों को बेहद निजी अंदाज में साझा किया है। कार्यक्रम में मौजूद उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गणेश गोदयाल, नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य और चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष प्रीतम सिंह ने भी कुमारी शैलजा की बातों से सहमति जताते हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। भोजन के बाद अतिथियों के बीच पुस्तक की विषयवस्तु और उसके भावनात्मक पहलुओं पर संक्षिप्त चर्चा भी हुई। उपस्थित लोगों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि लंबे समय बाद विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय मित्रों और परिचितों से एक साथ मिलकर संवाद करने का सुअवसर मिला है।

मालदेवता-टिहरी रोड पर अवैध प्लॉटिंग के खिलाफ एमडीडीए की कार्रवाई, 3-4 बीघा भूमि पर की गई सीलिंग

बिना स्वीकृति डिमार्केशन कर काटे जा रहे थे प्लॉट, प्राधिकरण ने नियमानुसार की कार्रवाई

देहरादून(नि०स०)। मसूरी-देहरादून विकास प्राधिकरण (एमडीडीए) ने अवैध निर्माण एवं अनधिकृत प्लॉटिंग के खिलाफ कार्रवाई करते हुए मालदेवता क्षेत्र में सीलिंग की कार्रवाई की है। प्राधिकरण की टीम ने केशरवाला, मालदेवता, टिहरी रोड, देहरादून में लगभग 3 से 4 बीघा भूमि पर की जा रही अवैध प्लॉटिंग के मामले में यह कार्रवाई की।

प्राधिकरण से प्राप्त जानकारी के अनुसार हरीश बिष्ट, आर्यन वालिया, सागर राणा एवं कुलदीप सिंह द्वारा संबंधित स्थल पर भूमि का डिमार्केशन कर प्लॉटिंग का कार्य किया जा रहा था। इस संबंध में प्राधिकरण की ओर से उत्तर प्रदेश नगर योजना एवं विकास अधिनियम के अंतर्गत वाद योजित किया गया। प्राधिकरण द्वारा संबंधित पक्ष को नियमानुसार प्रक्रिया के तहत कार्रवाई के दायरे में लिया गया, लेकिन अब तक विपक्षी पक्ष की ओर से प्लॉटिंग के संबंध में कोई स्वीकृति अथवा आवश्यक



दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए गए। इसके बाद प्राधिकरण ने नियमानुसार कार्रवाई करते हुए स्थल को सील कर दिया।एमडीडीए ने आमजन से अपील की है कि किसी भी भूमि या भूखंड में निवेश करने से पहले संबंधित विभागों से उसकी वैधता की पुष्टि अवश्य करें, ताकि अनधिकृत कॉलोनियों और प्लॉटिंग के नाम पर होने वाली संभावित धोखाधड़ी से बचा जा सके। एमडीडीए के उपाध्यक्ष बंशीधर तिवारी ने कहा कि प्राधिकरण क्षेत्र में बिना मानचित्र स्वीकृति और आवश्यक अनुमति के की जा रही प्लॉटिंग एवं निर्माण गतिविधियों के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही है। आमजन को भी किसी भूखंड की खरीदारी से पहले उसकी वैधता, प्राधिकरण की स्वीकृति और संबंधित अभिलेखों की जांच अवश्य करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अनधिकृत प्लॉटिंग से न केवल नियोजित विकास प्रभावित होता है, बल्कि आम नागरिकों को भी भविष्य में कानूनी और आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। प्राधिकरण का उद्देश्य देहरादून में सुनियोजित विकास सुनिश्चित करना है। इसके लिए अवैध गतिविधियों पर प्रभावी अंकुश लगाने की कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी। एमडीडीए के सचिव मोहन सिंह बर्निया ने कहा कि प्राधिकरण क्षेत्र में बिना स्वीकृति की जा रही प्लॉटिंग और अवैध निर्माण को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सभी संबंधित अधिकारियों को ऐसे मामलों में नियमित निगरानी और त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। आमजन से अपील है कि भूमि या भूखंड खरीदने से पहले उसकी वैधता और प्राधिकरण से स्वीकृत मानचित्र की जांच अवश्य करें।

स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक दीपक कुमार सहगल द्वारा मुद्रक रजत शर्मा, अभिप्रेरणा प्रिन्टर्स, पो.ऑ. बंजारावाला, कारगी, देहरादून, उत्तराखण्ड-248001 से मुद्रित कराकर 9/21 मोहित विहार, गुरूद्वारे के पीछे जी.एम.एस रोड़, कांवली रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड-248001 से प्रकाशित।

सम्पादकः- दीपक कुमार सहगल
मो.- 8755065050
E-MAIL ID : sehgal.deepak1@gmail.com
नोटः- सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा।